थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://thati.net/

किरन सोनी गुप्ता की कला दुनिया : नौकरशाही और रचनात्मकता का संगम

डॉ. कोमल लुहाच, पीएच.डी. (ड्राइंग और पेंटिंग – 2018), वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
पता – वेयर हाउस रोड, शिव मंदिर के सामने, चरखी दादरी, हरियाणा
ईमेल – komalsingh762@gmail.com

शोध–सार

किरन सोनी गुप्ता भारत के कला परिदृश्य में एक अद्वितीय व्यक्ति के रूप में खड़ी हैं, जो एक वरिष्ठ भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) अधिकारी और एक विपुल दृश्य कलाकार के रूप में अपनी भूमिकाओं को सहजता से मिश्रित करती हैं। उनकी कलात्मक यात्रा, स्व–शिक्षित तकनीकों और सामाजिक विषयों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की विशेषता है, जो शासन और रचनात्मकता के बीच परस्पर क्रिया में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। यह पेपर गुप्ता के कलात्मक विकास, विषयगत फोकस और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कला परिदृश्यों में योगदान की खोज करता है, जिसमें इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि उनके नौकरशाही अनुभव उनकी रचनात्मक अभिव्यक्तियों को कैसे प्रभावित करते हैं।

संकेत शब्द

किरन सोनी गुप्ता, भारतीय समकालीन कला, सिविल सेवक कलाकार, अमूर्त अभिव्यक्तिवाद, सांस्कृतिक कूटनीति, महिला सशक्तिकरण, कला प्रदर्शनियाँ।

परिचय

कला ही जीवन है मानव जीवन की एक अनिवार्य सृष्टि है जिसके बिना जीवन का अंतर बोध पूर्ण नहीं होता है अर्थात् कला जीवन के लिए अति आवश्यक भाव बोध है। जो हर कल और हर आज के लिए सदैव वर्तमान रहती है। क्योंकि भावों की अनुभूति और अभिव्यक्ति ही कला का शाश्वत सत्य है। इसी कल और आज मे कलाकार के बाहर फैली दुनिया भी मौजूद रहती है और उसकी भीतरी दुनिया भी।

भारतीय समकालीन कला के क्षेत्र में, किरन सोनी गुप्ता एक बहुमुखी व्यक्तित्व के रूप में उभरती हैं, जो दृश्य कलाओं में एक भावुक जुड़ाव के साथ एक उच्च रैंकिंग सिविल सेवा कैरियर की मांगों को संतुलित करती हैं। लुधियाना, पंजाब में जन्मी गुप्ता का कला से प्रारंभिक परिचय एक रचनात्मक रूप से प्रेरक घराने में हुआ। औपचारिक प्रशिक्षण

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://thati.net/

के अभाव के बावजूद, उनकी जन्मजात प्रतिभा और समर्पण ने उन्हें कला की दुनिया में आगे बढ़ाया, यहाँ तक कि उन्होंने 1985 में भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) में एक प्रतिष्ठित करियर की शुरुआत की।

प्रत्येक कलाकार अपनी अनुभूति के संवेदनशीलता के अनुरूप कलाकृति बनाता है। एक कलाकार की अनुभूतियों की गहराई सामान्य से कहीं अधिक होती है। अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए वह कोई भी माध्यम खोजने लगता है। चित्र निशब्द होते है। परंतु निशब्द होकर भी सबकुछ कह जाते है। जब एक अन्तस बिम्ब आकार लेता है तब कलाकार तन्मय होकर उसमें पूरी तरह समा जाता है। वह अपनी कलादृष्टि से जिस संसार की रचना करता है। वह ईश्वर की बनाई सृष्टि से ही ली गई होती है। क्योंकि मनुष्य की तरह कलाकार भी एक सामाजिक प्राणी है। तथा सामाजिक घटनाओं को अपने चित्रण में व्यक्त करने का प्रयास करता है। राजस्थान में ऐसे अनेक वरिष्ठ चित्रकार हुए जिनके अभिव्यक्ति की साक्ष्य उनकी कृतियां ही है, उन्हीं चित्रकारों में एक नाम किरन सोनी गुप्ता का है। ये एक चित्रकार होने के साथ–साथ एक लेखक व अच्छी प्रशासनिक अधिकारी भी है। 1985 में आई.ए.एस. की सेवारंभ की। रंग और तुलिका ने इनके अंतस में बसी चित्रदृष्टि की सृजनशीलता को खोज निकाला है। इनके सृजन क्षेत्र के विषय बहुत ही सामाजिक है जो संवेदनीय भावनाओं से ओतप्रोत है। किरन जी द्वारा इन चित्रों को अमूर्त शैली में चित्रित किया गया है। प्रत्येक शैली में चाहे पारम्परिक यथार्थ व अमूर्त हो, प्रत्येक शैली में अंकन कला तत्व के आधार पर होता है। ''अमूर्त कलाकृति वह है जिसमें रूपाकार रेखाएं और रंग किसी ''कथानक से कटकर अपना एक स्वायत्त संसार रचते हों। गैर आकृति मूलक और गैर–वर्णनात्मक कला को अमूर्त कला के खाने में रखा जा सकता है।''

समय के बदलाव के अनुरूप ही चित्रकला में भी बदलाव आता गया है तथा चित्रकारों द्वारा किए गए सृजन ने दर्शकों की दृष्टि को सदैव अपनी और आकर्षित किया है। अमूर्त शैली का अपना एक अलग रूप है। अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए कलाकार द्वारा इच्छित शैली को अपनाया जा सकता है तथा मनचाहे माध्यमों द्वारा विषयों को अभिव्यक्त किया जा सकता है। किरन सोनी गुप्ता जी ने भी अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए अमूर्त शैली को अपने चित्रों का आधार बनाया है। किरन जी ने राजस्थान प्रवास के दौरान ग्राम्य जीवन के विभिन्न पक्षों को चित्रित किया। उसके पश्चात उनकी शैली में परिवर्तन हुआ। प्रकृति समाज तथा मनुष्य का सघन रिश्ता इनके कामों में प्रकट हुआ है। प्रशासनिक सेवा में कार्यरत होने के कारण सामाजिक विषयों से इनका जुड़ाव अधिक रहा है। किरन जी द्वारा बनाए गए सामाजिक चित्रों तथा दैनिक जीवन के

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://thati.net/

विषयों को अमूर्त रूप में चित्रित किया गया है। 'कन्यादान' किरन जी द्वारा बनाए गए चित्र है। जिसे अमूर्त शैली में सृजित किया गया है। ज्यामितिय रूप में आकृतियों को बनाया गया है। सपाट रंगों को लगाते हुए बहुत ही सुंदर ढंग से चित्र को पूर्ण किया गया है। हल्के तथा गहरे रंगों का प्रयोग छाया तथा प्रकाश का पूर्ण आभास कराता है। आकृतियों की भाव– भंगिमा को न दर्शाते हुए भी दर्शक द्वारा कलाकार के भावों को समझा जा सकता है तथा शीर्षक का अनुमान भी पूर्ण रूप से लगाया जा सकता है। किरन जी के द्वारा बनाए गए चित्रों में यथार्थ शैली से अमूर्त शैली तक के परिवर्तन को भलीभांति देख सकते है। पूजा टाईम इनका एक चित्र है। जिसमें नारी आकृतियों का चित्रण किया गया हैं तथा नारी आकृतियों को पूजा के लिए जाते हुए चित्रित किया गया है। सूपीली मोटी रेखाओं द्वारा आकृतियों के केशों को बनाया गया है तथा चटकीले सपाट रंगों का प्रयोग किया गया है। जो सहज ही दर्शक का ध्यान अपनी और आकर्षित करते हैं। 'डेजर्ट सिम्फनी' चित्र में पशु तथा मानवाकृति दोनों को ही ज्यामितिय रूप में बनाया गया है। सपाट रंगों द्वारा प्रत्येक आकृति को अलग–अलग देखा जा सकता है तथा दर्शक द्वारा रेगिस्तान के रेत से निकले स्वरों को भली–भांति सुना जा सकता है।

कलात्मक शैली और माध्यम

किरन सोनी गुप्ता की कलात्मक शैली भावनात्मक गहराई, जीवंत रंग पैलेट और यथार्थवाद और अमूर्तता के एक तरल मिश्रण द्वारा चिह्नित है। स्व–शिक्षित होने के बावजूद, वह तेल, जल रंग, ऐक्रेलिक, चारकोल, पेंसिल और मिश्रित मीडिया सहित कई माध्यमों पर एक परिष्कृत कमांड प्रदर्शित करती है। उनकी बहुमुखी प्रतिभा उन्हें नाजुक रेखाचित्रों से लेकर बोल्ड, अभिव्यक्तिवादी कैनवस तक, दृश्य भाषाओं की एक विस्तृत श्रृंखला का पता लगाने की अनुमति देती है। गुप्ता के काम की परिभाषित विशेषताओं में से एक अमूर्त अभिव्यक्तिवाद की ओर उनका झुकाव है – एक ऐसी शैली जो सहज, अवचेतन सृजन और भावनात्मक तीव्रता पर जोर देती है। अपने अमूर्त टुकड़ों में, वह अक्सर महिलाओं की लचीलापन, ग्रामीण जीवन की लय और परंपरा और आधुनिकता के बीच परस्पर क्रिया जैसे विषयों की खोज करती हैं। घुमावदार रूपों, स्तरित बनावट और प्रतीकात्मक रंग विकल्पों का उनका उपयोग उनकी रचनाओं में गति और आंतरिक जीवन की भावना जोड़ता है। साथ ही, गुप्ता के प्रतिनिधित्वात्मक कार्य एक नौकरशाह और सामाजिक अधिवक्ता के रूप में उनके अवलोकन को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, 'नरेगा लेबर' शीर्षक वाली उनकी पेंटिंग ग्रामीण मजदूरों को गरिमा और ताकत की भावना के साथ चित्रित करती है, जो सरकारी रोजगार योजनाओं और जमीनी हकीकतों की ओर ध्यान आकर्षित करती है। इसके विपरीत, उनकी कलाकृति 'द कैस्केड' महिलाओं के अनुभवों की भावनात्मक तरलता को दर्शाती है, जिसे एक गतिशील, लगभग काव्यात्मक दृश्य शैली में प्रस्तुत किया गया है।

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://thati.net/

उनका अनूठा दृष्टिकोण अक्सर कला और सक्रियता के बीच की रेखाओं को धुंधला कर देता है। वह अपने माध्यम का उपयोग न केवल दृश्य रूप से आकर्षक काम बनाने के लिए करती हैं, बल्कि लैंगिक असमानता, गरीबी और पर्यावरण संबंधी चिंताओं जैसे सामाजिक मुद्दों पर टिप्पणी करने के लिए भी करती हैं। व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और सार्वजनिक प्रवचन के बीच बदलाव करने की क्षमता उनकी कला को आत्मनिरीक्षण और सामाजिक रूप से प्रतिध्वनित दोनों बनाती है।

आखिरकार, गुप्ता की कलात्मक शैली उनके जीवन की दोहरी पुकार – प्रशासन और कला – को दर्शाती है, जो न केवल दृश्य रूप से आकर्षक है, बल्कि अर्थ और उद्देश्य से भी भरपूर है।

विषयगत फोकस : सामाजिक मुद्दे और सशक्तिकरण

किरन सोनी गुप्ता की कला सामाजिक चेतना में गहराई से निहित है। उनका विषयगत ध्यान महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित है – विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण, पर्यावरणीय स्थिरता, ग्रामीण जीवन और सामाजिक न्याय। लोक प्रशासन में अपने समृद्ध अनुभव से आकर्षित होकर, गुप्ता रोजमर्रा की जिंदगी की चुनौतियों और जीत को आकर्षक दृश्य कथाओं में बदल देती हैं।

उनके काम में एक प्रमुख और आवर्ती विषय महिला सशक्तिकरण है। गुप्ता अक्सर महिलाओं को निष्क्रिय विषयों के रूप में नहीं, बल्कि परिवर्तन के गतिशील एजेंट के रूप में चित्रित करती हैं – लचीला, अभिव्यंजक और सामाजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने के लिए केंद्रीय। उदाहरण के लिए, उनकी पेंटिंग 'महिला सशक्तिकरण का जश्न' पूरे भारत में महिलाओं की ताकत, विविधता और गरिमा को दर्शाती है। बोल्ड रंग योजनाओं और आत्मविश्वास से भरे आंकड़ों के माध्यम से, वह समुदायों को आकार देने और प्रगति को प्रभावित करने में महिलाओं की भूमिका की पुष्टि करती हैं।

गुप्ता अपने कलात्मक लेंस को ग्रामीण भारत की ओर मोड़ती हैं, मजदूरों, कारीगरों और ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं को पकड़ती हैं। उनकी कृति 'नरेगा लेबर' महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम के तहत कार्यरत श्रमिकों को श्रद्धांजलि देती है, जिसमें श्रम में गरिमा और जीवन को बदलने में सार्वजनिक नीति की भूमिका पर जोर दिया गया है। ये चित्रण सहानुभूति से ओतप्रोत हैं, जो समानता और समावेशिता में उनके विश्वास को दर्शाते हैं।

उनके विषयगत पैलेट का एक और महत्वपूर्ण पहलू पर्यावरण जागरूकता है। गुप्ता ने जलवायु परिवर्तन, मरुस्थलीकरण और पारिस्थितिक संतुलन जैसे विषयों पर पेंटिंग की

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://thati.net/

है। प्राकृतिक रूपांकनों–पेड़, पानी, जानवर और पृथ्वी के रंगों का उनका उपयोग स्थिरता के लिए चिंता और पर्यावरण संरक्षण के साथ मानव विकास को सामंजस्य बनाने की तत्काल आवश्यकता को दर्शाता है।

व्यक्तिगत विषयों से परे, गुप्ता की कला दृश्य सक्रियता के रूप में कार्य करती है। उनकी पेंटिंग गैलरी स्थानों तक ही सीमित नहीं हैंय वे अक्सर संवाद, जागरूकता और शिक्षा के लिए मंच के रूप में काम करती हैं। चाहे प्राकृतिक आपदा के बाद का चित्रण हो, आदिवासी समुदायों की ताकत हो या हाशिए पर पड़े समूहों का सशक्तिकरण हो, उनका काम दर्शकों को प्रतिबिंबित करने, जुड़ने और कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

इस सामाजिक रूप से संलग्न अभ्यास के माध्यम से, किरन सोनी गुप्ता सौंदर्यशास्त्र और नैतिकता के बीच की खाई को पाटती हैं, तथा दिखाती हैं कि कला सुंदर और परिवर्तनकारी दोनों हो सकती है।

प्रदर्शनियाँ और वैश्विक मान्यता

किरन सोनी गुप्ता की कलाकृतियों को पूरे भारत और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बड़े पैमाने पर प्रदर्शित किया गया है, जिससे उन्हें समकालीन भारतीय कला में एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में पहचान मिली है। उनकी प्रदर्शनियाँ न केवल उनकी कलात्मक गुणवत्ता के लिए बल्कि उनके द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले विषयों के लिए भी उल्लेखनीय हैं – अक्सर सामाजिक मुद्दों, सांस्कृतिक पहचान और सशक्तिकरण पर केंद्रित होती हैं।

उनकी सबसे महत्वपूर्ण प्रदर्शनियों में से एक, जिसका शीर्षक 'एन आर्ट ओडिसी *(An Art Odyssey)*' है, 24 से 29 अक्टूबर, 2024 तक नई दिल्ली के बीकानेर हाउस में आयोजित की गई थी। इस शो ने एक कलाकार और सिविल सेवक के रूप में उनकी दशकों लंबी यात्रा की एक झलक पेश की, जिसमें विभिन्न शैलियों, माध्यमों और विषयों पर आधारित काम शामिल थे। तकनीकी महारत और भावनात्मक प्रतिध्वनि के मिश्रण के कारण प्रदर्शनी ने व्यापक ध्यान आकर्षित किया।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, गुप्ता का काम न्यूयॉर्क, बोस्टन, शिकागो, लंदन और टोरंटो जैसे प्रमुख सांस्कृतिक केंद्रों में दर्शकों तक पहुँच चुका है। उनकी कला को समूह प्रदर्शनियों, एकल शोकेस और साची आर्ट जैसी ऑनलाइन दीर्घाओं में प्रदर्शित किया गया है, जिससे उन्हें वैश्विक अनुसरण बनाने में मदद मिली है। इन अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों ने उन्हें न केवल भारतीय रचनात्मकता के प्रतिनिधि के रूप में बल्कि महिला अधिकारों, श्रम सम्मान और पर्यावरण संरक्षण जैसे वैश्विक मुद्दों की आवाज के रूप में भी स्थापित किया है।

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://thati.net/

कला जगत में उनके योगदान को कई पुरस्कारों और सम्मानों के माध्यम से स्वीकार किया गया है, जिसमें एक प्रशासक और कलाकार के रूप में उनकी दोहरी भूमिका को मान्यता देने वाले कई राष्ट्रीय पुरस्कार शामिल हैं। भारतीय सामाजिक–राजनीतिक वास्तविकताओं में निहित रहते हुए वैश्विक मंचों पर प्रदर्शन करने की उनकी क्षमता उनकी कलात्मक अखंडता और सार्वभौमिक अपील को दर्शाती है।

नौकरशाही और कला का अंतर्संबंध

एक आईएएस अधिकारी और कलाकार के रूप में गुप्ता की दोहरी पहचान शासन और रचनात्मकता के बीच सहजीवन पर एक अनूठा दृष्टिकोण प्रदान करती है। विभिन्न जिलों में संभागीय आयुक्त और जवाहर कला केंद्र के महानिदेशक जैसे पदों सहित उनकी प्रशासनिक भूमिकाओं ने उन्हें सांस्कृतिक पहलों को बढ़ावा देने और साथी कलाकारों का समर्थन करने के लिए मंच प्रदान किया है। यह अंतर्संबंध उनकी कला को समृद्ध करता है, इसे उनके नौकरशाही अनुभवों से प्राप्त अंतर्दृष्टि से भर देता है। किरन सोनी गुप्ता लोक प्रशासन और कलात्मक सृजन के बीच एक दुर्लभ और सम्मोहक अंतर्संबंध का प्रतीक हैं। एक वरिष्ठ भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) अधिकारी के रूप में, उन्होंने एक कलाकार के रूप में सक्रिय करियर को बनाए रखते हुए संभागीय आयुक्त, जवाहर कला केंद्र (JKK) के महानिदेशक और संस्कृति मंत्रालय में संयुक्त सचिव जैसे प्रमुख पदों पर कार्य किया है। यह दोहरी पहचान उनके काम के दोनों क्षेत्रों को समृद्ध करती है।

किरन सोनी द्वारा बनाए गए अमूर्त शैली के चित्रों ने जहाँ प्रारंभ में ज्यामीतिय आकार में आकृतियाँ नजर आती है परंतु आकृतियों की भाव–भंगिमाओं को कलाकार द्वारा नहीं बनाया गया है। परंतु धीरे–धीरे आकृतियों में भाव–भंगिमाओं ने भी स्थान ले लिया है। 'थ्री सीस्टर्स' किरन जी द्वारा बनाई गई चित्राकृति है। इस चित्र को देखकर अमृता शेरगिल तथा यामिनी राय की यादें ताजा हो जाती है। अमृता शेरगिल द्वाराा बनाई गई उनकी कृति तीन बहनें जिसमें तीन युवतियों को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया था तथा यामिनी राय द्वारा बनाई गई तीन युवतियों की कृति तथा जो अनटाईटलड है, उसमें तीन युवतियों को बनाया गया है। किरन जी की इस कृति तथा शीर्षक पर अमृता शेरगिल तथा यामिनी राय का प्रभाव अवश्य नजर आता है। परंतु किरन जी द्वारा इसे अमूर्त रूप में बनाया गया है तथा चटकीले सपाट रंगों द्वारा गहरे तथा उभरे भाग का अंकन किया गया है। किरन जी का जन्म पंजाब में हुआ तथा जैसा खुशनुमा हरा भरा तथा रंगीला वातावरण पंजाब का है। खुशनुमा वातावरण की झलक हमें किरन जी के चित्रों में देखने को मिलती है। किरन जी द्वारा ताजगी भरे चटकीले रंगों का प्रयोंग इनकी कृतियों में किया गया है। तैल रंगों द्वारा चित्रों का सृजन किया गया है। 'थ्री जनरेशन' चित्र में किरन सोनी जी ने

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://thati.net/

राजस्थान में नरेगा कार्यों के जरिए स्वावलंबन संबंधित यह पेटिंग चित्रित की है। ''आयल पेंट से बनाई गई इस पेंटिग में किरन ने नरेगा कार्यों के जरिए वित्तीय स्वावलंबन के प्रतीक के रूप में तीन पीढ़ियों को एक साथ काम करते हुए चित्रित किया गया है। इसमें अपनी मां और दादी के लिए वित्तीय स्वावलंबन के प्रतीक के रूप में स्कूल यूनिफॉर्म में एक लड़की को भी दर्षाया गया है।'' फ्रांस के लूव्र म्यूजियम में यह पेटिंग प्रदर्षित की गई है।

किरन जी ने राजस्थान की रंग बिरंगी कला संस्कृति को अपने चित्रों, में बड़ी खुबसूरती से सृजित किया है। राजस्थान की प्राकृतिक, भौगोलिक, सामाजिक परिवेश और कला, संस्कृति बेजोड़ है।

शासन में उनका अनुभव उनके कलात्मक दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करता है। ग्रामीण विकास, आपदा प्रबंधन, महिला सशक्तिकरण और सांस्कृतिक संरक्षण जैसे मुद्दों पर समुदायों के साथ मिलकर काम करने के बाद, गुप्ता अपने विषयों को बताने के लिए वास्तविक जीवन की कहानियों और प्रशासनिक अंतर्दृष्टि का सहारा लेती हैं। यह प्रामाणिकता उन्हें उन कलाकारों से अलग करती है जो दूर से समान विषयों का पता लगाते हैं। साथ ही, कला में उनकी भागीदारी ने उनकी प्रशासनिक भूमिकाओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए, जेकेके के महानिदेशक के रूप में, उन्होंने सांस्कृतिक कार्यक्रमों और कलाकार समर्थन पहलों का समर्थन किया, जिससे विविध कलात्मक आवाजों और कला के साथ सार्वजनिक जुड़ाव के लिए जगह बनाई गई। उनके नेतृत्व ने सरकारी संस्थानों और रचनात्मक समुदायों के बीच की खाई को पाटने में मदद की है। गुप्ता की कहानी को जो असाधारण बनाता है, वह इन मांग वाले क्षेत्रों को संतुलित करने की उनकी क्षमता है, बिना किसी की अखंडता से समझौता किए। उनका जीवन दर्शाता है कि कला और प्रशासन – जिन्हें अक्सर विपरीत माना जाता है – एक दूसरे के पूरक और सुदृढ़ हो सकते हैं। उनका रचनात्मक अभ्यास नीतिगत मुद्दों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को बढ़ाता है, जबकि उनका प्रशासनिक कार्य उनकी कला को जीवित अनुभव और सामाजिक प्रासंगिकता पर आधारित करता है। इस तरह, किरन सोनी गुप्ता एक मॉडल के रूप में कार्य करती हैं कि कैसे कलात्मक संवेदनशीलता सार्वजनिक नेतृत्व को बढ़ा सकती है, और कैसे सिविल सेवा सांस्कृतिक वकालत और अभिव्यक्ति के लिए एक मंच बन सकती है।

निष्कर्ष

किरन सोनी गुप्ता की यात्रा प्रशासनिक कौशल और कलात्मक उत्साह के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण का प्रतीक है। सामाजिक प्रासंगिकता और सशक्तिकरण के विषयों

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://thati.net/

द्वारा रेखांकित उनकी स्व–सिखाई गई कलात्मकता उन्हें समकालीन भारतीय कला में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में स्थापित करती है। अपने कार्यों के माध्यम से गुप्ता न केवल सामाजिक आख्यानों को प्रतिबिंबित करती हैं, बल्कि नीति और रचनात्मकता के दायरे को जोड़ते हुए सांस्कृतिक विमर्श में भी सक्रिय योगदान देती हैं।

किरन सोनी गुप्ता की कलात्मक यात्रा इस बात का एक दुर्लभ और प्रेरक उदाहरण है कि प्रशासनिक नेतृत्व और रचनात्मक अभिव्यक्ति किस तरह एक साथ रह सकते हैं और एक दूसरे को समृद्ध कर सकते हैं। एक वरिष्ठ सिविल सेवक और एक स्व–शिक्षित कलाकार के रूप में, गुप्ता अपनी दोहरी भूमिकाओं का उपयोग सामाजिक चिंताओं को उजागर करने, भारतीय संस्कृति का जश्न मनाने और हाशिए पर पड़ी आवाजों – विशेष रूप से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए करती हैं। उनकी कलाकृतियाँ केवल सौंदर्य रचनाएँ नहीं हैंय वे शासन, ग्रामीण विकास और सामुदायिक जुड़ाव में वास्तविक दुनिया के अनुभवों से प्रेरित दृश्य कथाएँ हैं। जीवंत रंगों, अमूर्त रूपों और प्रतीकात्मक छवियों के माध्यम से, गुप्ता महिला सशक्तिकरण, पर्यावरणीय स्थिरता और सांस्कृतिक पहचान जैसे विषयों की खोज करती हैं। नौकरशाही अंतर्दृष्टि को शक्तिशाली दृश्य कहानी में बदलने की उनकी क्षमता उनके काम को अद्वितीय और प्रभावशाली बनाती है। इसके अलावा, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों मंचों पर उनकी उपस्थिति भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ाती है और दिखाती है कि कैसे कला अपने संदर्भ में गहराई से निहित रहते हुए सीमाओं को पार कर सकती है। संक्षेप में, किरन सोनी गुप्ता कला की परिवर्तनकारी शक्ति का उदाहरण हैं जब यह जीवित अनुभव और सार्वजनिक सेवा के साथ जुड़ती है। उनका कार्य इस विचार का प्रमाण है कि रचनात्मकता किसी पेशे तक सीमित नहीं है, तथा कला वकालत, चिंतन और परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण साधन हो सकती है।

संदर्भ सूची

- भारद्वाज विनोद, वृहद् आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन, 21ए, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2006, द्वितीय संस्करण 2009, पृ. सं. 29
- मूमल (कला, संस्कृति व पर्यटन का पाक्षिक समाचार पत्र) वर्ष, 9, अंक 16 व 13 (सूचकांक) जयपुर, 16 से 31 दिसम्बर 2013, पृ. सं. 3
- ArtQuid. (n.d.). *Kiran Soni Gupta*. Retrieved from https://www.artquid.com/seller/29744/aboutArtQuid+1one.artquid.com+1
- ArtLife Today. (2024). *Kiran Soni Gupta: A persistent artist exploring mediums*. Retrieved from https://artlifetoday.in/kiran-soni-gupta-a-persistent-artist-exploring-mediums/khas khabar+2artlifetoday.in+2Musetouch Visual Arts Magazine+2

ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://thati.net/

- Saatchi Art. (n.d.). *Kiran Soni Gupta*. Retrieved from https://www.saatchiart.com/account/profile/175885Saatchi Art+2Saatchi Art+2Saatchi Art+2
- The Telegraph India. (2013). *Administrator-cum-artist*. Retrieved from https://www.telegraphindia.com/entertainment/administrator-cum-artist/cid/267743Telegraph India
- Instagram. (2024). *Art Exhibit. 24-29th Oct 2024 at Bikaner House New Delhi*. Retrieved from https://www.instagram.com/kiransoniart/p/DB2lRCGzQNE/Instagram+1khaskhabar+1
- Revalsys Technologies. (n.d.). *Kiran Soni Gupta - SubContinentArt*. Retrieved from https://art.revalsys.com/kiransoni.aspx?AP=art.revalsys.com